# जगत् भवानी श्री सच्चियाय मातेश्वरी का इतिहास

जगत् भवानी, ओसवालों की जन्मदात्री, परम पूज्या मातेश्वरी श्री सच्चियाय माता है। जैसे श्रीमालों की महालक्ष्मी, पोरवालों और पल्लीवालों की पद्मावती देवियें।

**सच्चियाय मातेश्वरी का इतिहास निम्नानुसार है–**

जिस समय भगवान् पार्श्वनाथ के छठे पटधर आचार्य भगवन्त श्री. रत्नप्रभ सूरी अपने शिष्य मण्डल सहित आबू की तलहटी में विचरण कर रहे थे, तब एक रात में परम पूज्या पद्मावती देवी प्रकट हुई। आचार्य भगवन्त को वन्दन किया। देशना श्रवण कर लौटते समय आचार्य भगवन्त से निवेदन किया ''प्रभु आप अपने धर्म का विस्तार करना चाहते हैं, तो आप उपकेशपुर पाटन की ओर प्रस्थान करें''।

प्रात: रायसी प्रतिक्रमण के पश्चात् आचार्य भगवन्त ने अपने ५०० शिष्य समुदाय को विहार की आज्ञा दी। आचार्य श्री. रत्नप्रभ सूरी ५०० सन्तों के साथ उग्र विहार करते हुए वीर सम्वत् ७० के प्रारम्भ में वैशाख मास के अन्तिम दिनों में उपकेशपुर पाटन की ओर पधारे। उपकेशपुर पाटन में ब्राह्मणों का प्रभुत्व था। अधिकांश ब्राह्मण श्रीमालपाटन (वर्तमान भीनमाल) के थे। श्रीमाल पाटन प्राचीनतम नगर था। द्वापर युग में इसका नाम रत्नमाल था। त्रेता युग में इसका नाम स्वर्णमाल रहा और अब कलयुग में भीनमाल कहलाता है। श्रीमालपाटन में आचार्य श्री. रत्नप्रभ सूरी के गुरु स्वयंप्रभ सूरी ने ब्राह्मणों और क्षत्रियों को प्रतिबोधित कर मातेश्वर महालक्ष्मी देवी के सहयोग से अनेक चमत्कारों से श्रीमालपाटन की जनता को समकित धर्म अंगिकार कराया। उनकी जाति बदल कर उन्हें महाजन बनाया। जो बाद में श्रीमाल कहलाये। ऐसी स्थिति में यज्ञ, हवन, क्रियाकाण्ड बन्द हो गये। ब्राह्मणों को आर्थिक क्षति पहुँची। अत: उपकेशपुरपाटन के ब्राह्मणों ने जब मुनियों को नगर की ओर आते देखा, तो नगर द्वार बन्द करा दिया। उनका नगर प्रवेश निषेध कर दिया।

ऐसी विकट परिस्थिति में आचार्य भगवन्त को अपने शिष्य समुदाय सहित नगर के बाहर लूणाद्री पहाड़ी पर ठहरना पड़ा। निर्दोष आहार के अभाव में तपश्चर्या प्रारम्भ हुई। एक-एक मास का तप हो गया विकट परिस्थिति थी। अत: देवसी प्रतिक्रमण के पश्चात् आचार्य भगवन्त ने सूर्योदय के पश्चात् विहार करने का आदेश दिया। रात में उपकेशपुर पाटन की अधिष्ठात्री देवी चामुण्डा प्रकट हुई। आचार्य श्री को विधि सहित वन्दन कर, क्षमायाचना करते हुए कहा कि 'मेरी सखी पद्मावती देवी ने आपकी सेवा में उपस्थित होकर आपको दैविक सहयोग प्रदान करने का आदेश दिया, लेकिन मैं रागरंग में लिप्त होने से भूल गई। आप सभी को मेरे कारण इतना परिसह सहन करना पड़ा। मैं पाप दोष की भागी बनी। अब मैं कुछ चमत्कार करती हूँ। मुझे क्षमा प्रदान करें' प्रात: रायसी प्रतिक्रमण के पश्चात् आचार्य श्री ने आदेश फर्माया कि 'जो जो सन्त उग्र तप कर सकते हैं, ठहर जावें। शेष प्रस्थान करें। वर्षावास समीप है।

'ऐसा कथन है कि ४६५ सन्तों ने विहार कर कोरन्ट नगर में चतुर्मास कर धर्म की प्रभावना की। ३५ सन्त, आचार्य सहित लुणाद्री पहाड़ी पर रहे। उपकेशपुर पाटन के राजा के एक मात्र पुत्री थी। अत: राजा ने अपने मन्त्री उहड़ के पुत्र त्रैलोक्यसिंह के संग अपनी पुत्री का विवाह करा कर त्रैलोक्यसिंह को युवराज घोषित किया। रात्री में जब युवराज और युवराज्ञी शयनकक्ष में निद्रामग्न थे, देवी ने एक सर्प का रूप धारण कर युवराज को डस लिया। इसके फलस्वरूप युवराज का देहान्त हो गया। समस्त राज्य और राजमहल में शोक व्याप्त हो गया। राजा, रानी, मन्त्री-मण्डल और अन्य समस्त प्रजाजन दु:खी थे। अन्ततः सीढ़ी तैयार कर युवराज की अन्तिम यात्रा आरम्भ की। रोते, विलाप करते समस्त जनता साथ थी। मार्ग में चामुण्डा देवी एक जैन मुनि का वेष धारण कर प्रकट हुई और यह कह कर अदृश्य हुई कि 'जीवित को जलाने क्यों जाते हो?'

देवी तो जानती थी कि युवराज जीवित है। यह सभी तो उसकी ही देवीलीला है। देवी की सूचना मिलते ही सभी जन आश्चर्यचकित हो गये। मुनि को ढूंढने लगे। कुछ लोगों ने कहा,'' ऐसे वेषधारी तो लूणाद्री पहाड़ी पर रहते हैं। अत: शव यात्रा लूणाद्री पहाड़ी की ओर चली। आचार्य और सन्तों ने शव यात्री आते देखे तो जान गये कि 'देवी ने कुछ चमत्कार किया है। 'सन्तों को कुछ कलपता नहीं, अत: सभी कायोत्सर्ग की मुद्रा में बैठ, ध्यान में लीन हो गये। देवी को मुनि वेष में पुन: प्रकट होना पड़ा। सभी को सम्बोधित कर देवी ने कहा, 'हमारे गुरुदेव महान चमत्कारी हैं। उनका एक छोटा-सा उदाहरण देख लो। थोड़ा गर्म जल लाकर गुरुदेव के दाहिने पाँव के अंगूठे का प्रक्षालन करो और प्रक्षालित जल को शव पर डालो। तुरन्त युवराज पुन: जीवित हो जावेंगे। ऐसी साधारण-सी बात का तुरन्त पालन किया गया। दैविक लीला के फलस्वरूप युवराज जीवित हो गये। ऐसी महान आश्चर्यपूर्ण घटना से सभी किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये।

आचार्य भगवन्त के जयजयकार के नारे लगाने लगे। राजा, रानी, युवराज, युवराज्ञी, मन्त्रीमण्डल व सभी आचार्य भगवन्त और मुनिराजों को बार-बार वन्दन करने लगे। राजा व मन्त्री मण्डल के भावभरे निवेदन पर आचार्यवर मुनिमण्डल सहित राजश्री वैभव के साथ नगर में पधारे। राजा ने उन्हें महल में चलने को कहा। तब आचार्य श्री ने फरमाया कि जिस भाग में हमें ठहरना है उस में से विलासिता की सामग्री को हटा लें।

राजा ने तुरन्त वैसी ही अविलास व्यवस्था करा दी। आचार्य भगवन्त के ठहरने के पश्चात् राजा अपने परिवार और दासियों के साथ जवाहरात, सोने आदि के थाल सजा कर भेंट स्वरूप लाये। तब आचार्य श्री ने फरमाया कि वे तो इन से वीरक्त होकर मुनि बने हैं। राजा व सभी आश्चर्यचकित रह गये। कहने लगे, 'हम अपने गुरुओं को रत्न, स्वर्ण, आभूषण, वस्त्र भेंट करते हैं और वे लेते हैं। आपने तो युवराज को नया जीवन प्रदान कर हम पर महान कृपा की है। उसके समक्ष तो यह तुच्छ है। यदि हम आपको सर्वस्व अर्पण करें तो भी वह तुच्छ है।'

आचार्यवर ने उस समय देशना दी, कि मुनि धर्म क्या है? आचार कैसा होता है? आहार व जल कैसे ग्रहण करते हैं? आदि, आदि। तब सभी सन्तों को विशेष आहार प्राप्त हुआ। पारणे हुए। सभी ओर सुखद वातावरण हुआ। चतुर्मास प्रारम्भ हो गया था।

धर्म ध्यान, तपस्या होने लगी। मुनि श्री ज्ञान सुन्दरजी महाराज के अनुसार श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन आचार्य भगवन्त श्रीरत्नप्रभसूरी ने उपकेशपुरपाटन में सर्वप्रथम प्रवचन फरमाया। ऐसे सारगर्भित प्रवचन को श्रवण कर उसी दिन १८ बन्धुओं ने श्रावक धर्म अंगिकार किया, जिन्हें महाजन बनाकर एक नई जाति की स्थापना की। उन १८ व्यक्तियों के नाम या जाति के आधार पर १८ गोत्रों की स्थापना हुई। इन १८ गोत्रों में एक आदित्यानाग गोत्र है। जिसकी प्रथम सहगोत्र चोरड़िया और बाद में अनेक गोत्रें बनी जिनकी गणना १०० से अधिक है। नवरात्री समीप थी। चामुण्डामाता को बलि चढ़ाना आवश्यक था। घर-घर में बलि हेतु बहुत दिनों पूर्व तैयारियाँ चलने लगीं। आचार्य श्री से यह बात छिपी नहीं रह सकी। अत: समस्त श्रावकों को बुलाकर आदेश दिया, ''जीव हिंसा महा पाप है, देव-देवी का भव अनेक जन्मों के सुकृतों का फल है। कर्म किसी को नहीं छोड़ता। तीर्थंकर भी अपने शेष समस्त कर्मों का फल भोग कर ही निर्वाण प्राप्त कर सकते हैं। नवरात्री पर बलि चढ़ाना महा पाप है, अत: कोई देवी को बलि नहीं चढ़ायेगा। ऐसे प्रत्याख्या न करो।''

चामुण्डा देवी के प्रकोप से सभी भयभीत थे। अत: उन सभी ने अपनी स्थिति स्पष्ट की। इस पर आचार्य श्री ने आदेश दिया कि तुम सभी चामुण्डा देवी के मन्दिर में जाओ और देवी से अनुरोध करो कि आचार्य श्री. रत्नप्रभसूरी ने हम सभी को बलि चढ़ाने का निषेध किया है। अत: हम क्षमाप्रार्थी हैं। यदि आप बलि चढ़वाना चाहें, तो कृपा कर एक बार आचार्य श्री से मिल लें।''

जनता के उक्त आह्वान पर देवी बहुत क्रोधित हुई। क्रोध में विवेक का अन्त हो जाता है। अत: देवी ने आचार्य श्री के नेत्रों में पीड़ा उत्पन्न कर दी। अन्तर्ज्ञान से आचार्य श्री को देवी प्रकोप से चक्षूपीड़ा का ज्ञान हुआ तो समभाव से पीड़ा सहते हुए समाधी में लीन हो गये। तीन दिन व्यतीत होने पर भी भयंकर चक्षु पीड़ा के कारण आचार्य भगवन्त पर लेश मात्र भी प्रभाव नहीं पड़ा तो देवी मनन करने लगी। तीन दिन के अन्तराल से क्रोध भी शान्त हो गया था। देवी ने आचार्य श्री के सम्मुख उपस्थित होकर क्षमायाचना कर प्रकोप का स्पष्टीकरण देते हुए कहा, 'मैंने तो आपको सभी प्रकार के सहयोग प्रदान किये और आप मेरा ही अनिष्ट कर रहे हैं। मेरा भोग बन्द करा रहे हैं। मुझे बलि नहीं चढ़ी, तो मुझे भूखों मरना पड़ेगा।''

'आचार्य श्री ने उत्तर दिया, 'हिंसा का मार्ग त्यागो, और तुम्हें क्या चाहिये'

देवी-'मुझे कर्ड़ा-मुर्ड़ा चाहिये'

आचार्य श्री-'कर्ड़ा-मुर्ड़ा मिलेगा। मैं भी सभी के साथ नवरात्री की पावन बेला में उपस्थित रहूँगा' देवी अन्तर्धान हो गई। जनसमूह को देवी के भोग कौन-कौन से चढ़ाना, उसकी तैयारी करा कर, समय पर साज सज्जा से विभूषित होकर, आचार्य श्री जनसमूह के साथ देवीपूजा हेतु मन्दिर पहुँचे। देवी की प्रतिमा का जनता ने प्रक्षालन किया। श्रृंगार किया। पूजा-सामग्री की सज्जा की। तब देवी पुन: प्रकट होकर क्रोध से कहने लगी, 'मेरा कर्ड़ा-मुर्ड़ा कहाँ है?'

आचार्य श्री-'यही कर्ड़ा-मुर्ड़ा है। कुमकुम, केशर, चन्दन, लापसी, श्रीफल, फल, फूल, प्रसाद आदि। इसी से सन्तोष करो। न जाने कितने जन्मों के तुम्हारे सत्कर्मों के फलस्वरूप तुम्हें देवीपद प्राप्त हुआ है। अब हिंसा की प्रवृत्ति से नर्क के बन्धन क्यों बाँध रही हो? जो बलि माँग रही हो उसे तुम तो नहीं भोग करती हो, पर पाप की भागी तो तुम्हीं हो। पाप का फल भी तुम्हें ही भुगतना पड़ेगा।'

देवी-'कर्म के कर्ता को ही कर्म का फल भुगतना पड़ेगा, मुझे क्यों?'

आचार्य श्री-'कर्म का कर्ता कर्म करना नहीं चाहता। तुम्हारे प्रकोप से भयभीत हो कर यह हिंसक कर्म कर रहे हैं। अत: कर्म के भोग का दायित्व तुम पर रहेगा। अपने जन्म-मरण के भवों का विस्तार करने के साथ अनन्त काल के नर्क के बन्धन तैयार कर रही हो। जिसे पूर्ण रूप से बिना भुगते तुम्हें मुक्ति प्राप्त नहीं होगी। तुम्हारा कल्याण इसी में है कि तुम तुरन्त रक्त-पात का त्याग करो। तुम देवी माता हो, वात्सल्य तुम्हारा धर्म है। यह रक्त का लाल रंग तुम्हें नर्क के अन्धकार में घसीट ले जाएगा।'

इस प्रकार अनेक दृष्टान्त देकर आचार्य भगवन्त ने देवी को प्रतिबोधित किया। देवी के ज्ञानचक्षु खुल गये।

देवी-'हे महान महात्मा! आपने मेरे अज्ञान का अन्त कर मुझे कुमार्ग से सन्मार्ग दिखाया, इस हेतु मैं आपकी आभारी हूँ। आज से मैं हिंसा का त्याग करती हूँ। मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ। मैं लाल रंग से घृणा करना चाहती हूँ। भविष्य में भक्तजन मुझे लाल पुष्प भी नहीं चढ़ाएँ, ये आदेश देती हूँ।'

आचार्य श्री-' हे देवी! अब तुम में मातृत्व के गुण जागृत हुए। अब तुम सच्ची माता हो। आज से तुम्हारे रौद्र रूप का नाम 'चामुण्डा' के स्थान पर वात्सल्य रूप का नाम 'सच्चियाय माता' प्रसिद्ध होगा।'' तुम्हारा कल्याण हो। उस दिन से चामुण्डा देवी का नाम 'सच्चियाय माता' हो गया। यह ओसवालों की लगभग ७०० से अधिक गोत्रों की कुलदेवी है, इसका मूल मन्दिर उपकेशपुर पाटन में था, जो आज की ओसियाँ है और ये जोधपुर से लगभग ४० मील पर जोधपुर-जैसलमेर राज्य मार्ग पर है। यों तो दर्शक बड़ी संख्या में प्रतिदिन आते रहते हैं। पर आसोज और चैत्र की नवरात्री में नौ दिनों का मेला लगा रहता है। यात्रियों के आवास, भोजन, बिस्तर, पूजा, जात, मुण्डन आदि की यहाँ समुचित व्यवस्था है। गर्भगृह में स्थापित प्रतिमा कसौटी के पत्थर की बनी है। प्रतिमा वस्त्राभूषणों से सज्जित है। इसके दाहिने हाथ में तलवार है। यह मन्दिर एक ऊँची पहाड़ी पर है। मुण्डन, जात देने हेतु ओसवाल यहाँ आते रहते हैं। सिंहद्वार से श्रृंगार चौकी तक १४५ सीढ़ियाँ हैं। इन पर नवदुर्गा के नाम के नवतोरण हैं। यह मन्दिर ४० नक्काशी युक्त स्तम्भों पर निर्भर है।

१९३६ में मन्दिर का विशाल परकोटा बना है।

*-चञ्चलमल लोढ़ा*